

बढ़ता ध्वनि प्रदूषण:

मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव

जिस ध्वनि से जीवन बना, आज वही जीवन का अंत करने पर आमादा है। क्यों ?

ध्वनि प्रदूषण:- अत्यधिक शोर जिससे हमारी दिनचर्या बाधित हो और सुनने में अप्रिय लगे, ध्वनि प्रदूषण कहलाता है।



वाहनों की संख्या तेज रफ़्तार से बढ़ रही है
लोगों की मौत की नई परिभाषा गढ़ रही है
पेड़ रहे हैं तेजी से कट
जीवन प्रत्याशा रही है घट
प्रदूषण बढ़ रहा लगातार
फैक्ट्रिया जो खुल रही कई हज़ार
नित नए हो रहे अविष्कार

ध्वनि प्रदूषण के मुख्य कारण:-

1. स्पीकर के उपयोग से
2. आधुनिक साधनों के उपयोग से
3. परिवहन के साधनों के उपयोग से

क्या आप जानते हैं:

सिरदर्द और थकान का कारण प्रदूषण भी है? ध्वनि प्रदूषण आपके ब्रेन सेल को डैमेज कर के आपको थकान का एहसास करवा सकता है।

शोर नुकसानदायक है, कैसे पता चले?

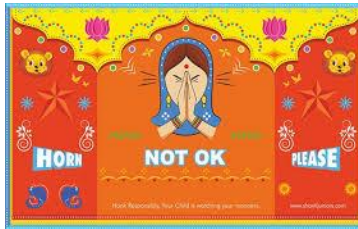
अगर आप शोर वाले इलाके से बाहर निकलें, तो आसपास की आवाज़ धुंधली सुनाई पड़े

आपको दूसरों के कानों तक पहुंचाने के लिए अपनी आवाज़ बढ़ानी पड़े



3 फुट की दूरी पर खड़ा शख्स अगर आपकी बात ना सुन पाए

शोर में जाने के बाद अगर कान में दर्द या घंटी बजने जैसा कोई अहसास हो



मानवता का दुश्मन शोर, इसे हटाने पर दो जोर



क्या आप जानते हैं

शोर की तीव्रता का मापन डेसिबल की इकाई में किया जाता है। मनुष्य की श्रवण क्षमता 80 डेसिबल होती है। मनुष्य 0 डेसिबल तीव्रता की आवाज को सुनने में सक्षम होता है। 25 डेसिबल पर शांति का वातावरण होता है। 80 डेसिबल से अधिक शोर होने पर मनुष्य में अस्वस्थता आ जाती है या बेचैनी होने लगती है तथा 130-140 डेसिबल का शोर अत्यंत पीड़ादायक होता है। इससे अधिक शोर होने पर मनुष्य में बहरा होने का खतरा होता है। किसी व्यक्ति के लगातार 8 घंटे तक 80-90 डेसिबल की ध्वनि में रहने से उसमें बहरापन शुरू हो जाता है।

ध्वनि प्रदूषण के प्रभाव: ध्वनि प्रदूषण से हमारे शरीर में निम्नलिखित प्रभाव दिखाई देते हैं-

1. सिरदर्द, थकान, अनिद्रा, श्रवण क्षमता में कमजोरी, चिड़चिड़ापन, उत्तेजना, आक्रोश आदि रोग उत्पन्न होने लगते हैं।
2. उपापचयी प्रक्रियाएं प्रभावी होती हैं। संवेदी एवं तंत्रिका तंत्र कमजोर हो जाता है। मस्तिष्क तनाव ग्रस्त हो जाता है तथा हृदय की धड़कन और रक्तचाप बढ़ जाता है। पाचन क्रिया कमजोर हो जाती है।
3. धमनियों में कोलेस्ट्रॉल का जमाव होने लगता है।

उपाय

